DATE 30.9.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec-33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'पथ की पहचान') भाग 1

पुस्तक - नवतरंग भाग-7

प्यारे बच्चो! सुप्रभात!

आज हम पाठ-9 'पथ की पहचान' कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ 75 पर लिखी कविता को पढ़ेंगे। सब बच्चे अपनी पुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका खोलें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। प्रश्नों के उत्तर पूछने पर आप उन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की ज़बानी,
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी, पंथ का अनुमान कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

बच्चो! यह कविता हरिवंशराय 'बच्चन' द्वारा रचित है। कवि कह रहे हैं कि जीवन के पथ पर आगे बढ़ने से पहले हमें तय करना चाहिए कि सामने दीख रहे रास्तों में से कौन-से रास्ते पर चलना उचित होगा। आइए, इस कविता को पढ़कर जानते हैं कि हमारे लिए कौन-सा रास्ता सही होगा— सबसे पहले हम कविता में आए कठिन शब्दों को उनके अर्थ के साथ समझ लेते हैं।

शब्दार्थ:- बटोही - राहगीर, राही बाट - रास्ता, पथ, राह

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

30.9.24

DATE
PAGE No. 2

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 'पथ की पहचान')

शब्दार्थ :- जबानी - मुँह से कही
औरों - दूसरों
अनगिनत - जो गिने न जा सकें
निशानी - (चिह्न), चिह्न, पहचान, निशानी
पंथी - राहगीर, यात्री
पूर्व - पहले

बच्चो! इस कविता में बताया गया है हमें अपने जीवन में कोई भी कार्य करना है या कहीं जाना है तो सबसे पहले हमें उस कार्य की तथा रास्ते की पूरी तरह से पहचान कर लेनी चाहिए कि कौन-सा कार्य हमारे लिए उचित रहेगा तथा जिस रास्ते पर हम चले हैं वह रास्ता हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचा देगा! इसलिए हमें कोई भी कार्य करने से पहले हमें सोच-विचार कर लेना चाहिए फिर कदम उठाना चाहिए क्योंकि हमारे जीवन पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं छापी गई है। यह तो हमें ही सुनिश्चित करनी पड़ती है। दूसरों के कथनानुसार हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते हैं। इसका फैसला हमें स्वयं लेना पड़ेगा। इस संसार में अनगिनत लोग इस रास्ते से होकर गए, उनका किसी को कुछ पता नहीं कि वे कहाँ गए! यहाँ कवि यह कहना चाहते हैं कि न जाने कितने लोगों ने यहाँ जन्म लिया और कितने मृत्यु को प्राप्त हुए! किसी को उनकी गिनती नहीं पता। जन्म-मरण का चक्र निरंतर घूमता ही रहता है।

इस संसार में कुछ ऐसे महान पुरुषों ने जन्म लिया है जिन्होंने अपने महान कार्यों को समाज के सामने प्रस्तुत हैं। ये उनके कार्य (निशानी) मूक होकर भी बहुत कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर जाते हैं, कह जाते हैं।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 30.9.24
PAGE No. 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 पद्य की पहचान)

इस प्रकार कवि कहते हैं कि हे राहगीर! तुम अपने मार्ग पर चलने से पहले उन महापुरुषों के पद-चिह्नों को अच्छी तरह से देख लो जो आपकी प्रेरणा बनेंगे। ये महापुरुष सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। अब ओ राहगीर! तुम उन लोगों के पद चिह्नों पर चलोगे या कोई अपना और मार्ग बनाओगे! यह निर्णय आपका अपना है।

बच्चो! अब मैं इस काव्य खण्ड के आधार पर कुछ प्रश्न पूछती हूँ। आप सब यहाँ तीन मिनट का समय लेकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1. कविता के अनुसार हमें किन लोगों से सीख लेनी चाहिए?
प्रश्न-2. इस कविता में किन लोगों के पदचिह्नों की मूक भाषा है?
प्रश्न-3. अनगिनत राही आए और गए इसका क्या अर्थ है?

बच्चो! अब आपका कालांश समाप्त हुआ। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1. 'पद्य की पहचान' नामक कविता में हमें उन महापुरुषों, कर्मयोगी, देशभक्तों से सीख लेकर जीवन को सार्थक बनाएँ।

उत्तर-2. जो लोग समाज में बड़े-बड़े कार्य करके गए हैं उन्होंने अपने कार्य पदचिह्नों के रूप में छोड़े हैं जिनकी भाषा मूक है। वे अपनी प्रसिद्धि के लिए नहीं, समाज की भलाई के लिए कार्य कर अपनी अमिट छाप छोड़कर इस दुनिया से विदा लेकर गए हैं। ऐसे लोग मरते नहीं।

उत्तर-3. जिस प्रकार सड़क पर अनगिनत लोग आते हैं, चलते हैं और वहाँ से गुज़र जाते हैं। उसी प्रकार इस संसार में हर पल अनगिनत लोग जन्म लेते हैं और ऐसे ही साधारण जीवन जीकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उन्हें कोई भी याद नहीं करता क्योंकि वे स्वयं के

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 30.9.24
PAGE No. 4

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 "पथ की पहचान")

लिए जिए इसलिए उन्हें कोई नहीं पहचानता। अपने पथ की पहचान वे ही बनाते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं।

बच्चो! इस कविता को हम यहीं समाप्त करते हैं। इसका शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। मुझे उम्मीद है कि पढ़ाया गया पाठ आपको अच्छी तरह से समझ में आ गया होगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य :- सब बच्चे इस कविता को उच्च स्वर में दो-तीन बार पढ़ेंगे, समझेंगे और याद करेंगे। शब्दार्थ जो पृष्ठ-76 पर लिखे हैं उन्हें अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner